मुझे संदर्भ के तीन अंक 40, 41 और 42 प्राप्त हुए। ज्वार-भाटा विषय पर प्रकाशित लेख से काफी नई जानकारियां मिलीं। अंक 42 में प्रकाशित 'दिखता है फल जैसा...' तथा 'नाइट्रोजन स्थिरीकरण' जैसे लेख भी वाकई ज्ञानवर्धक थे। मेरे पिताजी ने भी बहुत रुचि के साथ संदर्भ को पढ़ा।

शाहिना, ज़िला समन्वयक
शांति नगर, गुड़गांव, हरियाणा

शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ा होने के नाते मैं शिक्षा के संदर्भ में कुछ बातों पर आप सबका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। जैसेः मूलभूत शिक्षा सुविधाओं के बगैर विद्यालय, कक्षा 1 से 5 तक के लिए एक शिक्षक, शिक्षकों के लिए सालभर रोज़ कोई-न-कोई गैर शैक्षणिक कार्य, शिक्षा विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार, कमज़ोर तबकों के बच्चों का स्कूल न आ पाना, शिक्षाकर्मियों का शोषण वगैरह।

शैक्षिक संदर्भ के दर्जनों अंक देखे लेकिन उपरोक्त में से किसी भी विषय पर कोई लेख नहीं दिखा।

पिछले दिनों 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' बंद हुआ लेकिन संदर्भ पत्रिका में इस पर भी कोई लेख नहीं था।

अजित जैन 'जलज'
ककरवाहा, ज़िला टीकमगढ़, म. प्र.

हालांकि यह खत संदर्भ के किसी लेख से संबंधित नहीं है फिर भी मैं आपने लिखा के मार्फत संदर्भ के पाठकों तक पूर्ण विराम के महत्व से संबंधित एक छोटा-सा खत पेश कर रहा हूं। जिसे मैंने भी कहीं पढ़ा है। इसके मूल लेखक का नाम पता मैं भी नहीं जानता।

एक पत्नी ने अपने पति को खत लिखा जिसमें कहीं भी पूर्ण विराम नहीं लगाया। खत लिखने के बाद उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसने अपनी भूल को सुधारते हुए अपनी समझ के हिसाब से कुछ जगहों पर पूर्ण विराम लगा दिए, जिससे खत में लिखी बातों के सारे अर्थ ही बदल गए। उसका भेजा खत इस तरह था:

प्रिय पतिदेव,

प्रणाम। आपके चरणों में क्या चक्कर है। आपने कितने दिनों से चिट्ठी नहीं लिखी मेरी प्यारी सहेली गीता को। नौकरी से निकाल दिया हमारी गाय ने। बछड़ा दिया है दादाजी ने। शराब पीनी शुरू कर दी है मैंने। बहुत पत्र डाले मगर तुम नहीं आए मुर्गी के बच्चे। भेड़िया खा गया है राशन की चीनी। छुट्टी पर आते वक्त ले आना एक खूबसूरत औरत। मेरी नई सहेली बन गई है तुम्हारी मां। तुम्हें बहुत याद करती है एक पड़ोसन। मुझे तंग करती है तुम्हारी ज़मीन। पर गेहूं उग आई है ताऊजी के सिर में। सीकरी हो गई है मेरे पैर में। चोट लग गई है तुम्हारी चिट्ठी को। हर वक्त तरसती रही।

आपकी नीतू

रमेश जांगिड
भिरानी, ज़िला हनुमानगढ़, राजस्थान